शोध सारांश

मानव सभ्यता की सामाजिक विकास यात्रा जंगली अवस्था से शुरू होकर आधुनिक सभ्य समाज तक पहुँची है। इस सभ्य समाज की संरचना में परिवार मुख्य अंग है। आज पुराने परिवार व्यवस्थाएं टूटने की ओर अग्रसर हैं और नए परिवार के मूल्य स्थापित हो रहे हैं। भारत में भिन्न–भिन्न संस्कृति व समाज के लोग निवास करते हैं, जैसे हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध आदि हैं। हर समाज की अपनी-अपनी परंपरा, आस्था, रहन-सहन, भाषा और जाति की अलग-अलग पहचान है। फिर भी भारतीय समाज में व्यक्तिवाद की संस्कृति न होकर एक सामूहिक संस्कृति है, जो पारिवारिक जीवन का एक अभिन्न अंग है। पारिवारिक मूल्यों के रूप में भारतीय संस्कृति की अलग ही पहचान है।

समाज में भी किसी जाति, समुदाय, वर्ग को आधुनिक बदलाव के तरफ मोड़ करना एक बहुत ही संभावना को जकड़ कर रहती है। व्यावहारिक आचरण से दूरी हर किसी की नजर में बदनामी की बात होती हैं। दलितों के लिए अधिकार जैसी कोई वस्तु न तो कानून में थी और न सामाजिक दासता के कुचक्र में, फंसे है स्वयं दलित की कल्पना में । अम्बेडकर के साहसिक प्रयासें के कारण ही दलितों को संविधान निर्माण में अधिकार प्राप्त हुए। उन्होंने दलितों के अनुकूल संवैधानिक व्यवस्था करने का प्रयास किया। संस्कृति मनुष्य के सामाजिक जीवन की विभूति हैं किसी भी देश की आध्यात्मिक ,सामाजिक और मानसिक विभूति को उस देश की संस्कृति कहते हैं।

संस्कृति में मनुष्य के विचार, विश्वास, रूचि और आदर्श समाविष्ट रहते हैं मानव को एकता और प्रेम में एकसूत्र में बांधने का श्रेय संस्कृति को हैं जो युगीन जीवन को आत्मसात करके मानवता का मार्ग प्रशस्त कराती हैं। विगतकाल की मान्यताएं ,परम्पराएं एवं धारणाए वर्तमान के लिए मार्ग दर्शन होती हैं और वही वर्तमान भविष्य के लिय मानव जीवन के कार्य कलापों की सामग्री उपलब्द कराती हैं । संस्कृति का स्वरुप मानव के लिए बौद्धिक, आध्यात्मिक और नैतिक आदर्शों का निर्माण कर मानवीय सवेदानाओं की सृष्टि करता हैं ।

दुसाध जाति के पिछड़ने का एक मुख्य कारण इन किये गए अत्याचार एवं शोषण हैं। स्वतंत्र भारत में दुसाध जाति की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के सब रास्ते लगभग बन्द हो गए। इसकी एक मात्र वजह दलित हैं। इसी कारण इनकी स्थिति और दयनीय होने लगी। जब सरकार का दुसाध जाति पर ध्यान गया तो इनकी सामाजिक और आर्थिक क्षेत्रों के विकास के लिए कई व्यक्तिगत एवं सामुदायिक विकास योजनाओं के कार्यक्रम चलाये। दुसाध जाति में क्षेत्रीय विकास के साथ साथ सांस्कृतिक परिवर्तन भी हो रहा है। कुछ व्यक्ति अपनी परप्परागत सांस्कृतिक पहचान को समय के अनुसार बदलते हुए विकास की दौड़ में शामिल होना चाहते हैं, लेकिन ग्रामीण क्षेत्र में निवास करने वाले अधिकांश व्यक्ति अपनी परम्परागत पहचान को बचाने केलिए चिन्तित हैं। इस प्रकार दुसाध जाति समाज की पहचान का परंपरागत स्वरूप बदल रहा है। परिवर्तन के साथ साथ नयी पीढ़ी नये संदर्भ में उनकी अपनी पहचान का नयी किरण की स्थिति में है।

ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोजगारी पर सरकारी हस्तक्षेप तथा दलित परिवरों में सदस्यों की संख्या अधिक होने एवं कृषि भूमि का आकार बहुत छोटा होने से इनकी आजीविका के साधनों में कमी आ गयी है और दलित समुदाय उघोग, कल करखानों मिलों अर्थात् रोजगार के साधनों में कमी देखी गई है। बेरोजगारी की यह स्थिति दिनों दिन औरभी विकराल होती हा रही है। अतः केन्द्र एवं राज्य सरकार को अनुसूचित जाति के क्षेत्रों में लघु एवं कुटीर उघोग, कल करखाने, अर्थात् रोजगार के साधानों में वृद्धि करना चाहिये। जिससे देश के विकास कि मुख्य धारा में दलित समुदाय के व्यक्ति भी अपना महत्वपूर्ण योगदान एवं सहयोग प्रदान कर सके।

दलित समाज पर होने वाले अत्याचार एवं शोषण को देखते हुए कई संवैधानिक अधिकारों एवं कानूनों को समय-समय परबनाया गया है। लेकिन इसके बाद भी आज इन पर नियमित अत्याचार एवं शोषण हो रहा हैं। उत्तर प्रदेश के कई क्षेत्रों मे आज भी जातिगत, भेदभाव, बेगार प्रथा, शारीरिक शोषण, ठेकेदारों द्वारा कम मजदूरी देकर आर्थिक शोषण किया जा रहा हैं। इसके अलावा विभिन्न योजनाओं

एवं कार्यक्रमों में दिया जाने वाला अनुदान भी कर्मचारी, अधिकारी एवं बिचौलियों आदि के कारण नहीं मिल पाता हैं । इनमें अधिकतर संवैधानिक अधिकारों एवं कानूनों की जानकारी नहीं होने के कारण अत्याचार एवं शोषण को सहन कर रहे हैं। अतः संवैधानिक अधिकारों एवं कानूनों का प्रचार एवं प्रसार करते रहना चाहिये।

दुसाध जातियां प्राचीनकाल से ही नगरों से किनारे एकाकी जीवन व्यतीत करती रही हैं । यह कहा जा सकता है कि ये गैर जातीय के लोगों से सामान्यतः किसी भी प्रकार का सम्पर्क या सम्बम्ध नहीं रखती थी। और अपनी मूलभूत आवश्यकताएं भी अपनी पराम्परागत व्यवसाय से करती थी इसलिए दुसाध जाति के लोग अन्य गैर जातीय के लोगों से पिछड़ने का एक प्रमुख कारण इन पर किये गये अत्याचार एवं शोषण है। स्वतंत्रता के पश्चात् भारत सरकार ने जो अधिकार दिया था उस समय के ब्राह्मणों ने अछूत का दर्जा देकर बंद कर दिया था ।

यह दलित जातियां ही वर्तमान की अनुसूचित जाति और प्रारंभिक भारतीय जाति-व्यवस्था की जड़ मानी जानी वाली वर्ण-व्यवस्था की चैथी कड़ी शूद्र समुदाय है। शूद्र समुदाय की चर्चा के साथ ही हमारे सामने दुनिया के सबसे निष्कृष्ट व्यक्ति की तस्वीर उभर आती है। इस तस्वीर का व्यक्ति अछूत है। वह उच्च वर्ग के व्यक्ति के सामने आने का अधिकारी नहीं है, क्योंकि ऐसा माना जाता रहा है कि इनके दर्शन मात्र से उच्च जातियां अपवित्र हो जाती हैं।

दुसाध जाति के पिछड़ने का एक मुख्य कारण इन किये गए अत्याचार एवं शोषण हैं। स्वतंत्र भारत में दुसाध जाति की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के सब रास्ते लगभग बन्द हो गए । इसकी एक मात्र वजह दलित हैं। इसी कारण इनकी स्थिति और दयनीय होने लगी ।जब सरकार का दुसाध जाति पर ध्यान गया तो इनकी सामाजिक और आर्थिक क्षेत्रों के विकास के लिए कई व्यक्तिगत एवं सामुदायिक विकास योजनाओं के कार्यक्रम चलाये। दुसाध जाति में क्षेत्रीय विकास के साथ साथ सांस्कृतिक परिवर्तन भी हो रहा है। कुछ व्यक्ति अपनी परप्परागत सांस्कृतिक पहचान को समय के

अनुसार बदलते हुए विकास की दौड़ में शामिल होना चाहते हैं, लेकिन ग्रामीण क्षेत्र में निवास करने वाले अधिकांश व्यक्ति अपनी परम्परागत पहचान को बचाने केलिए चिन्तित हैं। इस प्रकार दुसाध जाति समाज की पहचान का परंपरागत स्वरूप बदल रहा है। परिवर्तन के साथ साथ नयी पीढ़ी नये संदर्भ में उनकी अपनी पहचान का नयी किरण की स्थिति में है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 15 से 16 का कार्यान्वयन बिना भेदभाव के कार्यान्वित किया जाय तथा आरक्षण के सिद्धान्त का पूर्णरूपेण पालन किया जाए। ताकि ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बढ़ाकर इनके अन्य राज्यों में पलायन को रोका जाय, ताकि स्थायी जीवन के विभिन्न आयामों से यह समुदाय जुड़ सके।

दलितों को और विशेष तौर पर दुसाध समुदय को उनके लिए बनायी गयी विशेष कानून एवं कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी नहीं है। जरूरी है कि इन्हें इन कानूनों एवं योजनाओं की जानकारी दी जाए। इसके लिए इनके बीच लगातार जागरूकता अभियान चलाने की आवश्यकता है। सर्वेक्षित क्षेत्र में स्वास्थ्य सेवा नगण्य है। ओझा, भगत द्वारा इलाज और अंधविश्वास की जड़ बहुत मजबूत है। इनके विकास के लिए जरूरी है कि इस जड़ की बुनियाद को तोड़ा जाए। यह तभी संभव है जब उचित स्वास्थ्य सेवा इनकी बस्ती तक पहुंचे। अतः उचित स्वास्थ्य सेवा इनकी बस्ती तक पहुँचायी जाए और लगातार स्वास्थ्य जागरूकता अभियान करवायें जाए।

r